सं भो बिल / यमुना / 5-83 / 62120. — पूर्कि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि हरियाणा रोडवेज, यमुनानगर के श्रमिक श्री भोज राज तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

भौर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना विक्रनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, भोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपछारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/ 16254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, अधियूचना सं० 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, करीचाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित मीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या भी भोज राज की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो विव /यमुना / 204 - 83/62126. - चूं कि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि हरियाणा रोडवेज, यमुनानगर के श्रमिक श्री इन्द्र राज तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिणय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री इन्द्र राज की सेवामों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

## 30 नवस्त्रर, 1983

सं ओ वि | ममुना | 234-83 | 62577 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि म० हरियाणा रोडवेज, यमुनातगर, के श्रमिक श्री विनोद कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीबोगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल, विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:

इसलिए, भन, भोद्यौगिक दिवाद भिष्ठितियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा भवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भिष्ठसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए भिष्ठसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त भिष्ठित्यम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मानला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भववा संबंधित मामला है :—

क्या श्री विनोद कुमार, की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक, 1 दिसम्बर, 1983

सं श्रो वि /हिसार/12-83/62715 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हिसार टक्सटाईल मिल्ज, हिसार के श्रमिक श्री सतनारायण तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, मन, मौद्योगिक विवाद मिद्यानियम , 1947 की धारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्याल इसके द्वारा सरकारी मिद्युवना सं 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी प्रधिसूचना सं 3864-ए.एस.मो.(ई)-श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त मिद्यिनयम की धारा 7 के स्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहनक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय हेतु निर्दिश्ट करने हैं जो कि उक्त प्रवन्त्रकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सतनारायण की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

 $\mathbf{t}$ ं. श्रो.वि./198-83/62722 —चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मेसर्ज शंकर टैक्सटाईल, 41/6, बहालगढ़ रोड़ सोनीपत $\mathbf{t}_{2}^{\mathbf{j}}$  के श्रमिक श्री राम श्रवतार तथा, उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद जिब्रित मामले में कोई श्रीशोगिक विवाद है $\mathbf{j}$ ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

[सलिए, श्रब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यनाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित इसरकारी श्रिधसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं,जोकि उक्त, प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विश्वत्रप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत पा सम्बन्धित मामला है :--

वया श्री राम अवतार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./सोनीपत/98-83/62729.—-चूंकि हरियाणा ,के राज्यपाल की राय है कि मैं शंकर टैक्सटाईल 41/6, बहालगढ़ रोड़, सोनोपत के श्रमिक श्री क्रुष्ण चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि] हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना वांछतीय समझते हैं ;

इस लिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. \$9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए एस श्रो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री कृष्ण चन्द की सेवाग्रों का समापन न्यायोचिन तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकेदार है ?

सं. मो.वि हिसार/38-83/62736.—चूंकि हरियाणा के राज्यवाल क्रुँकी राय है कि मै० महा प्रजन्धक, हरियाणा राज्य परिवहन, सिरसा, के श्रीमक श्री केवल कृष्ण शर्मा तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाब ग्रिविवियन, 1947 की घारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविव्या सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिविव्या सं. 3864-ए.एस.ग्रो (ई) श्रम-70/13648, दिगांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिविवियमु की घारा 7 के ग्रिवीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुमंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच वा तो विवादग्रस्त मामवान्है या उक्त विवाद से सुनंगत या सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री केवल कृष्ण शर्मा की सेवाग्रों का सामापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत कर हकदार है ?